राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन॰सी॰एफ॰) 2005 -:

National Curriculum Framework (N.C.F.) 2005 -:

प्रस्तावना -

संशोधित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या दस्तावेज का आरंभ रवीन्द्रनाथ टैगोर के निबंध "सभ्यता और प्रगति के एक उद्धरण से होता है। जिसमें कविगुरु हमें याद दिलाते हैं कि सृजनात्मकता और उदार आनंद बचपन की कुंजी है और नासमझ व्यस्क संसार द्वारा उनकी विकृति का खतरा है। आरंभिक अध्याय में स्वतंत्रता के बाद किए गए पाठ्यचर्या को सुधारने की चर्चा की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन॰पी॰ई॰), 1986 में यह प्रस्तावित किया गया था कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या को शिक्षा की राष्ट्रीय व्यवस्था विकसित करने का एक साधन होना चाहिए जो भारतीय संविधान में राष्ट्रीय निर्माण के "दर्शन" को अपनी आधार भूमि माने। कार्ययोजना (पी॰ओ॰ए॰), 1992 ने प्रासंगिकता लचीलेपन और गुणवत्ता के तत्वों पर जोर देते हुए इसके दायरे को थोड़ा और विक--सित किया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन॰सी॰एफ॰), 2005 भारत में विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत, सिलेबस, पाठ्यपुस्तकें तथा अध्यापन विधियाँ तैयार करने के लिए एक ढाँचा प्रदान करता है। यह दस्तावेज शिक्षा पर इससे पूर्व दी गई रिपोर्टें जैसे, लर्निंग विदआउट बर्डन (बिना बोझ के सीखना), राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ 1986 व 1992 तथा फोकस समूह की चर्चाओं पर आधारित है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 का उपागम तथा इसकी अनुशंसाएँ समस्त शिक्षा प्रणाली के लिए संगत है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की मुख्य विशेषताएँ -:

- यह प्रलेख निम्न पाँच भागों में बँटा हुआ है -
  (i) सर्वांगी सुधार
  (ii) परिप्रेक्ष्य
  (iii) अधिगम तथा ज्ञान
  (iv) पाठ्यचर्या क्षेत्र विद्यालय स्तर तथा मूल्यांकन
  (v) विद्यालय और कक्षा वातावरण
- इस प्रलेख में पाठ्यचर्या निर्माण के पाँच निर्देशक सिद्धान्तों का प्रस्ताव रखा गया है -

(i) ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना।

(ii) पढ़ाई रटन्त प्रणाली से मुक्त हो यह सुनिश्चित करना।

(iii) पाठ्यचर्या का इस तरह संवर्धन कि वह बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाए बजाए इसके कि पाठ्यपुस्तकें केन्द्रित बनकर रह जाए।

(iv) परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना।

(v) एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास जिसमें प्रजातांत्रिक राज्यव्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्रीय चिंताएँ समाहित हो।

Scanned with CamScanner

- स्कूली पाठ्यचर्या के चार सुपरिचित क्षेत्रों- भाषा, गणित, विज्ञान और समाज विज्ञान में - महत्वपूर्ण परिवर्तनों का सुझाव दिया गया है। इस दृष्टि से कि शिक्षा आज की और भविष्य की जरूरतों के लिए ज्यादा प्रासंगिक बन सके और बच्चों को उस दबाव से मुक्त किया जा सके जो वे आज झेल रहे हैं।
- गणित की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चों के वे संसाधन समृद्ध हो जो चिंतन और तर्कमय अमूर्त की संकल्पना करने और उनका व्यवहार करने में, समस्याओं को सूत्रबद्ध करने और सुलझाने में उनकी सहायता करें।
- विज्ञान के शिक्षण में इस तरह की तब्दीली की जानी चाहिए कि यह हर बच्चे को अपने रोज के अनुभवों को जाँचने और उनका विश्लेषण करने मे सक्षम बनाए। परिवेश संबंधी सरोकारों और चिंताओं पर हर विषय में जोर दिए जाने की जरूरत है और यह ढेरो गतिविधियों और बाहरी दुनिया पर की गई परियोजनाओं के द्वारा होना चाहिए।
- सामाजिक विज्ञान में पाठ्यचर्या के इस दस्तावेज द्वारा प्रस्तावित उपागम ज्ञान के क्षेत्रों की विशिष्ट सीमाओं को पहचानता है और साथ ही समाज से सम्बन्धित महत्वपूर्ण मुद्दों के लिए समाकलन पर जोर भी देता है। हाशिए पर ढकेल दिए गए समूहों की दृष्टि से समाज विज्ञान के अध्ययन का प्रस्ताव करते हुए नजरिए में एक पूरी तब्दीली की सिफारिश की गई है ताकि बच्चों के सामाजिक परिवेश को ध्यान में रखते हुए पाठ्यचर्या का निर्माण किया जा सके।
- कार्य, कला और पारंपरिक दस्तकारियाँ, स्वास्थ्य तथा शारीरिक शिक्षा, एवं शांति आदि को आरंभिक स्तर से शुरू करते हुए अधिगम से जोड़ने के लिए कुछ बुनियादी कदम सुझाए गए है। उनके पीछे यह आधार है कि ज्ञान कार्य को अनुभव में रूपांतरित कर देता है। वरिष्ठ कक्षाओं में स्कूल के बाहर के संसाधनों को औपचारिक मान्यता देने की सिफारिश है ताकि उन बच्चों को लाभ पहुँच सके जो आजीविका से सीधे जुड़ी हुई शिक्षा का चुनाव करते हैं।
- हर स्तर पर विषय के रूप में कला को जगह दिए जाने की सिफारिश की गई है जिसमें गायन, नृत्य, दृश्य कलाएँ और नाटक चारों पहलू शामिल हो। परन्तु यहाँ भी जोर परस्पर क्रियात्मक पद्धतियों पर होना चाहिए न कि प्रशिक्षण पर। क्योंकि कला शिक्षण का उद्देश्य सौंदर्यात्मक और व्यक्तिगत चेतना को प्रोत्साहित करना है और विविध रूपों में खुद को व्यक्त करने की क्षमता को बढ़ावा देना है।
- स्कूलों में बच्चों की कामयाबी उसके पोषण और सुनियोजित शारीरिक गतिविधि मध्याह्न भोजन कार्यक्रम (Mid Day Meal Programme) को सुदृढ़ बनाने में लगाना चाहिए। यह सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रयासों की जरूरत होगी कि स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रमों में प्रारंभिक कक्षाओं से आगे तक लड़कों की तरह ही लड़कियों की ओर भी उतना ही ध्यान दिया जाए।
- पूरी दुनिया में बढ़ती असहिष्णुता और मतभेदों को सुलझाने के तरीके के रूप में हिंसा की ओर बढ़ते रूझान को देखते हुए इस बात की सिफारिश की गई है कि शांति को राष्ट्रीय निर्माण की पूर्व शर्त और एक सामाजिक संस्कार के रूप में समग्र मूल्य संरचना के तौर पर स्वीकार किया जाए। जिसकी आज अत्यधिक प्रासंगिकता है।

Scanned with CamScanner

• स्कूल के माहौल को पाठ्यचर्या के एक पहलू की तरह देखा गया है क्योंकि यह बच्चों को शिक्षा के उद्देश्यों और सीखने की उन युक्तियों के लिए तैयार करती है जो स्कूल में सफलता के लिए जरूरी है और इसके लिए, इसे कुछ बुनियादी प्रश्नों को सम्बोधित करना होगा -:

(i) स्कूल किन शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा करने की कोशिश करें?
(ii) इन उद्देश्यों के लिए कौन-से शैक्षिक अनुभव कारगर होंगे?
(iii) ये शैक्षिक अनुभव किस प्रकार सार्थक रूप से नियोजित किए जा सकते हैं?
(iv) हम कैसे सुनिश्चित कर सकते है कि ये शैक्षणिक उद्देश्य वाकई पूरे हो रहे हैं?

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 के अनुसार विभिन्न विषय कक्षानुसार -:

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 के अनुसार कक्षा 1 से कक्षा 12 तक कब, क्या, क्यों और कैसे पढ़ाना अथवा सीखाना चाहिए उसकी रूपरेखा निम्नवत है –

कक्षा 1 से 5 तक –

(i) मातृभाषा (क्षेत्रीय भाषा)
(ii) अंग्रेजी
(iii) गणित
(iv) एकीकृत पर्यावरण अध्ययन
(v) कला व शिल्प
(vi) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा
(vii) कार्य अनुभव

कक्षा 6 से 8 तक –

(i) मातृभाषा (क्षेत्रीय भाषा)
(ii) आधुनिक भारतीय भाषा
(iii) अंग्रेजी
(iv) विज्ञान
(v) गणित
(vi) सामाजिक अध्ययन (इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान तथा अर्थशास्त्र)
(vii) कला शिक्षा
(viii) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा
(ix) कार्य अनुभव

कक्षा 9 से 10 तक –

(i) मातृभाषा (क्षेत्रीय भाषा)
(ii) अंग्रेजी
(iii) संस्कृत / उर्दू / अन्य
(iv) गणित
(v) विज्ञान
(vi) सामाजिक अध्ययन (इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान तथा अर्थशास्त्र)
(vii) कम्प्यूटर
(viii) कार्य शिक्षा
(ix) शान्ति शिक्षा
(x) कला शिक्षा

कक्षा 11 से 12 तक –

(i) मातृभाषा (क्षेत्रीय भाषा)
(ii) अंग्रेजी
(iii) गणित

Scanned with CamScanner

(iv) कम्प्यूटर
(v) भौतिक विज्ञान
(vi) रसायन विज्ञान
(vii) जीव विज्ञान
] विज्ञान वर्ग ऐच्छिक

(viii) राजनीति विज्ञान
(ix) भूगोल
(x) इतिहास
(xi) अर्थशास्त्र
(xii) समाजशास्त्र
(xiii) मनोविज्ञान
] कला वर्ग ऐच्छिक

(xiv) व्यापार अध्ययन
(xv) एकाउन्टेन्सी
] वाणिज्य वर्ग ऐच्छिक

(xvi) कला शिक्षा
(xvii) अन्य ऐच्छिक विषय

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का मूल्यांकन -:

महात्मा गाँधी ने शिक्षा को एक ऐसी माध्यम के रूप में देखा था, जो सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त अन्याय, हिंसा व असमानता के प्रति राष्ट्र की अंतरात्मा को जगा सके। "नयी तालीम" ने भी व्यक्ति के आत्मनिर्भरता व उसके आत्म सम्मान पर जोर दिया है तथा यह भी माना है कि व्यक्ति के ये गुण ऐसे सामाजिक संबंधों का आधार बने जिनकी खासीयत हो समाज के भीतर व बाहर अहिंसा।

गाँधी जी ने यह भी सुझाया था कि बच्चे को रूपांतरित होते सामाजिक परिदृश्य का एक अंग बनाने के लिए बच्चे के आस-पास के पर्यावरण, जिसमें मातृभाषा व कार्य भी आते हैं, का एक साधन के रूप में उपयोग किया जाए। उन्होंने ऐसे भारत का सपना देखा था जिसमें प्रत्येक बालक अपनी योग्यता व संभावनाओं की तलाश कर सके और दूसरों के साथ विश्व के पुनर्निर्माण के लिए काम कर सके। एक ऐसा विश्व जिसमें आज भी राष्ट्र के बीच समाज के भीतर, तथा मानवता व प्रकृति के बीच संघर्ष बर-करार है, देखा जा सकता है और इन्हीं को दूर करने का प्रयास व हल हमें खोजना है। इन्हीं सब विषयों को ध्यान में रखते हुए देश के प्रतिष्ठित विद्वानों, विचारकों तथा शिक्षाविदों ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 को तैयार किया। यह अत्यंत परिश्रम तथा विचार-विमर्श पर आधारित है तथा सम्पूर्ण भारतवर्ष के विद्यार्थियों व शिक्षकों को एक साथ बाँधने वाला है।

परन्तु, जैसा कि हम जानते हैं कि कोई भी प्रक्रिया या योजना तब तक अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकती जब तक कि उसका क्रियान्वयन सम्पूर्ण निष्ठा व परिश्रम से न किया जाए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की समीक्षा करने पर अवगत होता है कि इसमें उपलब्ध कराई गई सामग्री में कोई ठोस ताल-मेल नहीं है यह कई छोटे-छोटे व आकर्षक उदाहरणों से ओत-प्रोत है परन्तु स्पष्ट व वांछित दिशा-निर्देशों का अभाव लिए हुए है। इसमें इस बात पर जोर दिया गया है कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों के व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ाना है, रटने के बजाय समझने पर बल

Scanned with CamScanner

देना आवश्यक है, छात्रों पर पढ़ाई का बोझ कम होना चाहिए (Learning Without Burden), परन्तु वास्तविकता में ऐसा नहीं हुआ। छात्रों के साथ-साथ उनके अभिभावकों पर बोझ बढ़ा हुआ ही प्रतीत होता है।

अन्त में यही कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम चाहे कितना भी अच्छा तथा चुनौतीपूर्ण क्यों न हो, वह तभी प्रभावी हो सकता है जब उसका क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए। आज इस बात पर जोर देने की आवश्यकता है कि छात्रों में मात्र विषयगत समझ ही नहीं अपितु उन विषयों के व्यावहारिकता पर बल दिया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner